ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 6 अंक : 1 अक्टूबर-नवम्बर 2015 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

दीपावली पर अभिमन्त्रित पूजन सामिग्री एवं पूजन किट	डा. महेश पारासर	3
श्वेतार्क गणपति के अद्भूत प्रयोग	डा. रचना के भारद्वाज	5
कनकधारा यंत्र	डा. शोनू मेहरोत्रा	6
दरिद्रता दूर करने के लिए घर के मंदिर में ध्यान रखें ये 10 बातें	पुष्पित पारासर	7
द्वादश लग्नों के आधार पर धन–समृद्वि हेतु दीपावली पर उपाय कर लाभ पाऐ	डा. अरविन्द मिश्र	8
शक्ति का पूजा कन्या पूजन	पवन कुमार मेहरोत्रा	9
दीपावली पूजन विधि	पुष्पित पारासर	10
स्फटिक लक्ष्मी गणेश– सुख शांति	विष्णु पाराशर	12
अपना व्यवहार बदलिए ग्रहों का व्यवहार भी बदलेगा	सुरेश अग्रवाल	12
पाँच त्यौहारों का पर्व है दीपावली	श्री श्री भगवान पारासर	13
दीपावली पर कैसे करें रंग व वास्तु का सही प्रयोग	पं. अजय दत्ता	14
कूट्टू वेजी कबाब	शुभी गुप्ता	15
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	16–17
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

दीपावली हेतु अभिमन्त्रित पूजन सामिग्री एवं पूजा किट

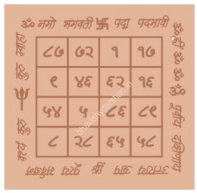

लक्ष्मी वाहन यंत्र

कौड़ी

धनियाँ

गोमती चक्र

गुंजा

लघु व एकांक्षी नारियल

काली हल्दी

कमल गट्टा

चावल

रुद्राक्ष

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

दीपावली पर अभिमन्त्रित पूजन सामिग्री एवं पूजन किट

प्रिय सदस्यों! आप सभी को **भविष्य दर्शन** की तरफ से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं। भगवान से यही कामना करता हूँ कि आप सभी की दीपावली शुभ एंव सुखमय रहें। प्रत्येक वर्ष में अपने अनुभव द्वारा कुछ न कुछ पत्रिका में विशेष रूप से दीपावली के लिये कुछ सामग्री प्रकाशित करने का प्रयास करता हूँ जिससे पाठको को एंव आम जनता को लाभ प्राप्त हो सकें। पिछले वर्ष मैंनें एक पूजन किट के बारे में प्रकाशित किया था जिसमें सभी वस्तुओं को एंव यंत्र को सिद्ध करके हमने दिया था। मेरे पास कुछ 5 महीने बाद पूजन किट से लाभान्वित व्यक्तियों के पत्र आये, फोन आये एंव अलग अलग माध्यम से पता चला कि जो पूजन किट जिन व्यक्तियों ने ली थी उनको चल रही आर्थिक परेशानी में बहुत लाभ मिला (जैसे रूका हुआ धन आया, नौकरी में पदोन्नति, व्यापार में लाभ एंव आर्थिक तंगी का दूर होना) एवं उन्होनें मुझसे निवेदन किया कि मैं पुनः यह पूजन सामिग्री पत्रिका में प्रकाशित करु जिससे और भी लोग इस पूजन सामिग्री से लाभ पा सके। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि इस वर्ष की दीपावली भी आप सभी के लिये शुभ एंव लाभदायी हो। माता स्वरस्वती जी, श्री गणेश जी एंव माता श्री महालक्ष्मी जी का आपके घर में वास हो।

प्रतिवर्ष कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को दीपावली पर्व मनाया जाता है। दीपावली पर्व पर घर घर में दीप जलाये जाते हैं। मिष्ठानादि से भोग लगाकर लक्ष्मी गणेश जी की पूजा करी जाती है। सभी वर्गों के लोग तथा अमीर गरीब हर स्थिती का व्यक्ति दीपावली पर लक्ष्मी आगमन की कामना करता है। विशेष रूप से व्यापारी वर्ग के लिए यह महत्वपूर्ण पर्व होता है तथा कर्ण वर्ग इस पर्व का इन्तजार नया कार्य प्रारम्भ करने के लिए करते हैं।

लक्ष्मी को चंचला कहा गया है लक्ष्मी जी एक जगह पर अधिक समय तक स्थिर नहीं रहती हैं। इसलिए दीपावली पर जन जन नाना प्रकार से पूजा अर्चना करके लक्ष्मी जी को स्थिर रखने की कामना करते हैं। लक्ष्मी जी को स्थिर रखने हेतु व प्राप्ति के लिए कुछ विशेष धन प्राप्ति सामिग्री को, सिद्ध व अभिमन्त्रित पूजा किट तैयार की गयी है जिसे प्रयोग में लाकर आप लाभ प्राप्त कर सकते है।

पूजन हेतु पूजा किट में– रोली, चावल, बतासे, कलावा, सुपारी, लौंग, इलायची, धूपबत्ती, कपूर, इत्र शीशी, जनेऊ, सिन्दूर आदि **धन लाभ हेतु तिजोरी में रखने हेतु अभिमन्त्रित सामिग्री–** यंत्र, कमलगट्टा, कौड़ी, गौमती चक्र, काली हल्दी, गुँजा, लघु नारियल, अक्षत, धनियाँ, सुपारी, रूद्राक्ष आदि।

श्री लक्ष्मी (धन एवं मान सम्मान वृद्धि) यंत्र– दीपावली के पूजन में श्री लक्ष्मी यंत्र की पूजा विधि विधान

से करने से माँ लक्ष्मी की कृपा चिरकाल तक बनी रहती है। माँ लक्ष्मी की स्थिरता के लिए ही इस यंत्र की पूजा दीपावली पर की जाती है। इसकी पूजा बहुत ही आसान है। इस यंत्र को स्थापित करने इस यंत्र की फल, फूल, गंध, अक्षत, रोली, कुमकुम से पूजन करके इस यंत्र से लक्ष्मी पीछे लघु बीज मंत्र **'ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः'** मंत्र का 11 माला जाप कमल गट्ढे की माला या स्फेटिक की माला से करना चाहिए। इससे लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर सभी तरफ से खुशहाली प्रदान करती है।

गुँजा– गुँजा को सिद्ध करके शुभ मुहुर्त में धन स्थान पर रखने से आर्थिक लाभ की प्राप्ति होती है एवं ऋण मुक्ति में भी लाभप्रद होता है।

गोमती चक्र– गोमती चक्र भगवान विष्णु जी का प्रतीक माना जाता है। अतः जहाँ विष्णु जी का आशीर्वाद है वहाँ लक्ष्मी जी का वास रहता हैं। यह चक्र लक्ष्मी जी को विशेष प्रिय है।

कौडी– कौड़ी को प्राचीन कालखण्ड में लक्ष्मी स्वरूप में ही प्रयोग किया जाता था। कौड़ी सिद्ध करके घर अथवा दुकान में रखने से लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहती हैं।

काली हल्दी– काली हल्दी अभिमन्त्रित करके घर में स्थापित करने से बुरी नजरों से बचाव होता है। शुत्रओं पर विजय प्राप्त होती है तथा कार्य सिद्ध होते हैं।

कमलगटटा– लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने हेतु कमल के बीज कमलगट्टों से उनका पूजन व हवन किया जाता है जिससे लक्ष्मी जी की कृपा बरसने लगती है।

लघु व एकांक्षी नारियल– यह दुर्लभ नारियल लक्ष्मी जी को अत्यंत प्रिय है घर में लाल कपड़े पर सिन्दूर लगाकर स्थापित करने से धन लाभ होता है।

रूद्राक्ष– सिद्ध रूद्राक्ष के दर्शन या स्पर्श (छूने) मात्र से पापों का नाश होता है तथा घर में या प्रतिष्ठान में स्थापित करने से नकारात्मक ऊर्जा का नाश होता है एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होती है।

अक्षत– अक्षत (चावल) से पूजन करने से व स्थापित करने से कुल वृद्धि होती है एवं रुके हुये कार्य भी सिद्ध होते हैं। अक्षत (चावल) से बनी खीर से लक्ष्मी जी का हवन करने से लक्ष्मी जी स्थिर बनी रहती है एवं उनकी असीम कृपा भी बनी रहती है।

धनियाँ– सिद्ध साबुत धनियाँ को पूजा स्थल में या तिजोरी में स्थापित करने से धन धान्य की वृद्धि होती है तथा तंत्र एवं टोने–टोटकों से बचाव भी होता है।

यह धन प्राप्ति पूजा सामग्री का प्रयोग कर आप लाभान्वित हो सकते हैं। दीपावली पूजन की विधि पत्रिका के पेज क्रमांक 12 पर विस्तार से दे रखी है। **प्रत्येक दीपावली पर यंत्र को छोडकर पूजन सामिग्री का हर सामान यमुना जी में विसर्जित करें।** पूजन सामग्री प्राप्ति हेतु (भविष्य दर्शन) संस्थान में सम्पर्क करें।

महेश पाराशर

1500/– की खरीद पर पायें
15% की छूट
3100/– की खरीद पर पायें
25% की छूट

दीपावली पूजन का समय सन् 2015

11–11–2015 बुधवार के दिन पूजन समय प्रातः 7:02 से 11:25 तक, दोपहर 1:24 से 4:04 बजे तक, सांय 5:40 से 9:51 बजे तक, रात्रि 12:14 से 4:44 बजे तक के मुहूर्त रहेंगें। जिसमे सर्वश्रेष्ठ पूजन समय प्रातः 7:02 से 9:18 बजे तक, प्रातः 10:40 से 11:25 बजे तक, सायं 7:06 से 9:51 बजे तक एवं रात्रि 3:18 से 4:44 बजे तक रहेंगें। जिसमें अभीष्ट धन लाभ, सिद्धि प्रद रहेगी। राहुकाल का समय दोपहर 12:02 से 1:23 तक।

अमृत वचन

दुःख दर्पण है दिखाता है और सुख दर्शक है केवल देखता है।

हमारे कर्म हमारी इच्छा के अनुरूप ही होते हैं तथा कर्म ही हमारे भाग्य का निर्माण करते है।

श्वेतार्क गणपति के अद्भूत प्रयोग

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

श्वेतार्क मूल में गणेशजी का वास होता है और यदि तान्त्रिक विधि से वह मूल प्राप्त करके घर में स्थापित किया जाये तथा उसका दैनिक पूजन हो तो वह गणेशजी की भांति उस घर परिवार को श्री समृद्धि से सम्पन्न करके साधक की समस्त भौतिक बाधाओं का शमन कर देती है। परन्तु प्रतिबन्ध यह है कि श्वेतार्क मूल पूर्णतया शास्त्रीय तांत्रिक दंग से प्राप्त की जाए और तदनुसार ही उसका पूजन हो। आईये जाने श्वेतार्क के महात्म्य को।

श्वेतार्क प्राप्ति विधि- यदि अपने पता लगा रखा है कि अमुक स्थान ज्ञान पर श्वेतार्क का पौधा है तो वहां से विधिवत् उसकी जड़ श्वेतार्क मूल ले आयें। यदि किसी व्यक्ति ने आपको दे दिया है, अथवा अन्य कहीं से मिल गयी है तो उसे कहीं एकान्त पवित्र स्थान में रख दें। उसका उपयोग रविपुष्प के दिन ही प्रारम्भ करना चाहिए।

पूजन विधि-श्वेतार्क मूल प्राप्त हो जाने पर उसे साफ करके शुद्ध जल से स्नान करायें फिर लाल कपड़े पर स्थापित करके उसकी पूजा करें। पूजा में लाल चन्दन, अक्षत, लाल पुष्प, सिन्दूर का प्रयोग किया जाता है। धूप दीप देकर नैवेद्य के साथ कोई सिक्का भी अर्पित करें। इसके पश्चात् गणेश जी के मंत्र का **"ऊँ वक्रतुण्डाय नमः"** 1 या 5 माला हरे हकीक की माला से जाप करें । मंत्र जप आरम्भ करने के पूर्व संकल्प कर लेना चाहिए कि है इतनी संख्या में जप करूंगा। श्वेतार्क मूल को साक्षात् गणेशजी मानकर जो व्यक्ति यह तांत्रिक साधना करता है वह ज्ञान, सम्पति, सुरक्षा और निर्विघ्न शान्ति प्राप्त करता है।

श्वेतार्क गणपति के प्रयोग : श्वेतार्क गणपति का तात्पर्य है सफेद आक से निर्मित गणपति जिसके घर में श्वेतार्क गणपति हैं उसके घर में दरिद्रता रह ही नहीं सकती। श्वेतार्क गणपति के सामने यदि **"ऊँ वक्रतुण्डाय नमः"** मंत्र की एक माला मंत्र जप किया जाये तो निश्चय ही उसके जीवन में उन्नति होती रहती है।

धन धान्य सुख सौभाग्य ऐश्वर्य और प्रसन्नता के लिये श्वेतार्क गणपति से श्रेष्ठ और कोई विग्रह होता ही नहीं है जिसे घर में स्थापित किया जायें। जिसके घर में दरिद्रता हो और प्रयत्न करने पर भी आर्थिक उन्नति नहीं हो, उसे अवश्य ही घर में श्वेतार्क गणपति स्थापित करना चाहिए।

जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति सौभाग्य, श्रेष्ठता और पूर्णता प्राप्त करने के लिए श्वेतार्क गणपति अत्यन्त अद्वितीय है।

श्वेतार्क गणपति का अर्थ है आक से निर्मित गणपति। जहाँ पर अथक प्रयासों के बावजूद किसी कार्य में सफलता नहीं मिल पा रही है, दरिद्रता दामन नहीं छोड़ रही हो तो उस व्यक्ति को श्वेतार्क गणपति दीपावली पर जरूर स्थापित करना चाहिए। इस प्रयोजन का ये सबसे सरलतम उपाय है। नित्य हरे हकीक की माला से निम्न मंत्र का एक माला जाप करें।

"ऊँ वक्रतुण्डाय नमः"

श्वेतार्क गणपति को सदैव अपने घर में रखें। यदि संभव हो तो नित्य दूर्वा अर्पित करें। जीवन मे सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति सौभाग्य, श्रेष्ठता और पूर्णता प्राप्त करने के लिए श्वेतार्क गणपति अत्यन्त अद्वितीय है, श्वेतार्क गणपति के संबंध में यहां तक कहा गया है कि धन–धान्य, सुख सौभाग्य, ऐश्वर्य और प्रसन्नता प्राप्ति हेतु श्वेतार्क गणपति से श्रेष्ठ और कोई विग्रह नहीं, इस विग्रह का घर, प्रतिष्ठान में स्थापित होना ही पर्याप्त है। इसे पूजा स्थान में स्थापित करें। **"ऊँ गणायै पूर्णत्व सिद्धिं देहि देहि नमः"**

इस मंत्र की नित्य एक माला जपे तो सोने में सुहागा साबित होगा।

इस साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति जीवन के समस्त कर्जों से छुटकारा पा लेता है एंव दरिद्री जीवन सें मुक्त हो जाता है। इस साधना हेतु साधक को सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर चावल की ढेरी करें फिर उस पर श्वेतार्क गणपति स्थापित कर कुंकुम चावल, मोली से पूजा करें व धूप दीप करें। गणपति को सिंदूर अर्पित करें। फिर हरे हकीक की माला से निम्न जाप करें।

ऊँ नमो विघ्नहराय गं गणपतये नमः।

इस मंत्र की 5 माला जप करें एंव साम्रगी को (श्वेतार्क गणपति एंव मूंगे की माला) लाल कपड़े की पोटली में बाधं लें। दीपावली के दिन पोटली गणपति मंदिर में जाकर गणेशजी के चरणों में रखकर दरिद्रनाश की प्रार्थना करें व घर चले आयें।

❋❋❋

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

कनकधारा यंत्र

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

तांत्रिक उपासनाओं एंव साधनाओं में विभिन्न प्रकार के यंत्रो द्वारा मनोकामना पूर्ति का वर्णन मिलताहै। तंत्र शास्त्र की मान्यता है कि यंत्र देवी देवताओं की आत्मा स्वरूप होते हैं तथा यंत्र को देवी देवताओं का शरीर माना जाता है।

विभिन्न प्रकार के यंत्रो का निर्माण प्रायः बिन्दु अंक रेखा, त्रिकोण, वृत इत्यादि के सहयोग से किया जाता है। यंत्र का सामान्य तात्पर्य विशिष्ट क्रम, आकृति एंव मंत्र इत्यादि के माध्यम से किसी देवता का पूजन एंव ध्यान करना होता है। जो चित्त को एकाग्र करने तथा उपास्य देव के साथ तादात्म्य भाव उध्न करने का साधन है।

हम सभी जीवन में आर्थिक तंत्रो को लेकर परेशान रहते हैं। धन प्राप्ति के लिये हर सम्भव प्रयास करना चाहते हैं। धन प्राप्ति व धन संचय के लिये पुराणों में वर्णित कनकधारा यन्त्र व कनकधारा स्त्रोत चमत्कारिक रूप से लाभ प्रधन करता है।

पूजन विधि– सर्वप्रथम एंव लकड़ी की चौकी पर पीला वस्त्र बिछाकर हल्दी से मिले चावलों से अष्टकमल बनाकर शुभ मुर्हुत में **श्री कनकधारा** यंत्र की स्थापना करें इसके पश्चात् यंत्र पर धूप, दीप, अक्षत, रोली, हल्दी, नैवध, फल, पान सुपारी लौंग इलायची पीले पुष्प इत्र इत्यादि चढ़ाकर कनक धारा स्त्रोत का पाठ करें। वर्ष भर इसकी पूजा करने से लक्ष्मी सदैव प्रसन्न रहती हैं। यदि कभी पूजा न भी हो तो भी सिद्ध यंत्र होने के कारण कोई दिक्कत नहीं आती है क्योकि यंत्र सिद्ध होने के कारण चैतन्य माना जाता है।

माँ लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिये जितने भी उपाय हैं उनमें श्री कनकधारा यंत्र सबसे ज्यादा प्रभावशाली व अतिशीघ्रफलदायी माना जाता है।

अर्थ कनकधारा स्तोत्रम्

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अङ्गीकृताऽखिल-विभूतिरपाङ्गलीला माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः।।1।।
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपा-प्रणहितानि गताऽऽगतानि।
मालादशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः।।2।।
विश्वामरेन्द्रपद-विभ्रमदानदक्ष-मानन्द-हेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध-मिन्दीवरोदर- सहोदरमिन्दिरायाः।।3।।
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द-मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम्।
आकेकरस्थित- कनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः।।4।।
बाहवन्तरे मधुजितः श्रित कौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।5।।
कालाम्बुदालि-ललितोरसि कैटभारे-र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति-र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।।6।।
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत् प्रभावान् माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थर-मीक्षणार्धं मन्दाऽलस्च मकरालय-कान्यकायाः।।7।।
दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा मस्मिन्नकिञ्चन विहङ्गशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्म-धर्ममपनीय चिराय दूरं नारायण-प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः।।8।।
इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र दृष्टया त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्ट-कमलोदर-दीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः।।9।।

शेष पेज 11 पर.....

दरिद्रता दूर करने के लिए घर के मंदिर में ध्यान रखें ये 10 बातें

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

अधिकांश घरों में देवी देवताओं के लिए एक अलग स्थान होता है। कुछ घरों में छोटे छोटे मंदिर बनवाए जाते है। नियमित रूप से घर के मंदिर में पूजन करने पर चमत्कारी रूप से शुभ फल प्राप्त होते हैं। वातावरण पवित्र बना रहता है, जिससे महालक्ष्मी सहित सभी दैवीय शक्तियां घर पर अपनी कृपा बनाए रखती हैं।

यहां कुछ ऐसी बाते बताई जा रही हैं जो घर के मंदिर मे ध्यान रखनी चाहिए। यदि इन छोटी छोटी बातों को ध्यान रखा जाताहै। तो पूजन का श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है और लक्ष्मी की कृपा से घर में धन धान्य की कमी नहीं होती है।

1. पूजा करते समय किस दिशा की ओर मुख होना चाहिए अपना मुंह घर में पूजा करने वाले व्यक्ति का मुंह पश्चिम दिशा की ओर होगा तो बहुत शुभ रहता है। इसके लिए पूजा स्थल का द्वार पूर्व की ओर होना चाहिए। यदि यह संभव ना हो तो पूजा करते समय व्यक्ति का मुंह पूर्व दिशा में होगा, तब भी श्रेष्ठ फल प्राप्त होता है।

2. कैसी मूर्तियां रखनी चाहिए घर के मंदिर में ज्यादा बड़ी मूर्तियां नहीं रखनी चाहिए। शास्त्रों के अनुसार बताया गया है कि यदि हम मंदिर में शिवलिंग रखना चाहते है। तो श्विलिंग हमारे अंगूठे के आकार से बड़ा नहीं होना चाहिए। शिवलिंग बहुत संवेदनशील होता है और इसी वजह से घर के मंदिर में छोटा सा शिवलिंग रखना शुभ होता है। अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां भी छोटे आकार की ही रखनी चाहिए (अधिकतम 9 इंची)। अधिक बड़ी मूर्तियां बड़े मंदिरों के लिए श्रेष्ठ रहती है।

3. कैसे मंदिर तक पहुंचनी चाहिए सूर्य की रोशनी और ताजी हवा। घर में मंदिर ऐसे स्थान पर बनाया जाना चाहिए, जहां दिनभर में कभी भी कुछ देर के लिए सूर्य की रोशनी अवश्य पहुंचती हो। जिन घरों में सूर्य की रोशनी और ताजी हवा आती रहती है, उन घरों के कई दोष स्वतः ही शांत हो जाते हैं। सूर्य की रोशनी से वातावरण की नकारात्मक ऊर्जा खत्म होती है और सकारात्मक ऊर्जा में बढ़ोतरी होती है। अगर ऐसा संभव न हो पाये तो पीले रंग का बल्ब अधिकांश समय जलाना चाहियें।

4. पूजन सामग्री से जुड़ी खास बातें पूजा में बासी फूल, पत्ते अर्पित नहीं करना चाहिए। स्वच्छ और ताजे जल का ही उपयोग करें। इस संबंध में यह बात ध्यान रखने योग्य है कि तुलसी के पत्ते और गंगाजल कभी बासी नहीं माने जाते हैं। अतः इनका उपयोग कभी भी किया जा सकता है। शेष सामग्री ताजी ही उपयोग करनी चाहिए।

5. अगर आपके पूजा घर में श्री ठाकुर जी है तो उनको नित्य प्रतिदिन दक्षिणावर्ती शंख से ही स्नान कराना चाहिये। तत् पश्चात् शंख में थोडा जल भर के रखें। कभी भी शंख को खाली नहीं रखना चाहिये।

6. पूजन कक्ष में चमडे से बनी चीजे, जूते चप्पल नहीं ले जाना चाहिए। पूर्वजों के चित्र लगाने के लिए दक्षिण दिशा शुभ रहती हैं। घर में दक्षिण दिशा की दीवार पर मृतको के चित्र लगाए जा सकते हैं। पूजन कक्ष में पूजा से संबधित सामग्री ही रखना चाहिए। अन्य कोई वस्तु रखने से बचना चाहिए।

7. पूजन कक्ष के आसपास शौचालय नहीं होना चाहिए घर के मंदिर के आसपास शौचालय होना भी अशुभ रहता है। अतः ऐसे स्थान पर पूजन कक्ष बनाएं, जहां आसपास शौचालय न हो। यदि किसी छोटे कमरे में पूजा स्थल बनाया गया है तो वहां कुछ स्थान खुला होना चाहिए, जहां आसानी से बैठा जा सके।

8. रोज रात को सोने से पहले मंदिर को पर्दे से ढक देना चाहिए। जिस प्रकार हम सोते समय किसी प्रकार का व्यवधान पसंद नही करते हैं ठीक उसी प्रकार से मंदिर पर पर्दा ढक देना चाहिए।

9. सभी मुहूर्त में करें गौमूत्र का ये उपाय वर्षभर में जब भी श्रेष्ठ मुहूर्त आते हैं, तब पूरे घर में गौमूत्र का छिड़काव करना चाहिए। गौमूत्र के छिड़काव से पवित्रता बनी रहती है और वातावरण सकारात्मक हो जाता है। शास्त्रों के अनुसार गौमूत्र बहुत चमत्कारी होता है। और इस उपाय से घर पर दैवीय शक्तियों की विशेष कृपा होती है।

10. खंडित मूर्तियां ना रखें शास्त्रों के अनुसार खंडित मूर्तियों की पूजा वर्जित की गई है। जो भी मूर्ति खंडित हो जाती है। उसे पूजा के स्थल से हटा देना चाहिए और किसी पवित्र बहती नदी में प्रवाहित कर देना चाहिए। खंडित मूर्तियों की पूजा अशुभ मानी गई है। इस संबंध में यह बात ध्यान रखने योग्य है कि सिर्फ शिवलिंग कभी भी किसी भी अवस्था में खंडित नही माना जाता है।

11. पूजन के बाद पूरे घर में कुछ देर बजाएं घंटी यदि घर में मंदिर है तो हर रोज सुबह और शाम पूजन अवश्य करना चाहिए। पूजन के समय घंटी अवश्य बजाएं। साथ ही एक बार पूरे घर में घूमकर भी घंटी बजानी चाहिए। ऐसा करने पर घंटी की आवाज से नकारात्मकता नष्ट होती है और सकारात्मकता बढ़ती है।

❋❋❋

द्वादश लग्नों के आधार पर धन-समृद्धि हेतु दीपावली पर उपाय कर लाभ पाऐ

डॉ. अरविन्द मिश्र
ज्योतिष भूषण, वास्तुशास्त्राचार्य

धन–समृद्वि हेतु दीपावली पर उपाय कर लाभ पाऐ, दीपावली का त्यौहार कई महत्वपूर्ण विशेषताओं के लिए जाना जाता हैं। यह त्यौहार न सिर्फ माता लक्ष्मी जी के पूजन का पर्व बल्कि यह दिन साधना व उपासना की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस रात्रि में की गई साधना विशेष लाभप्रद रहती हैं। वैसे इस दिन लक्ष्मी पूजन तो सभी घरों मे होता है। साथ ही कुछ विशिष्ट उपाय भी कियें जा सकते हैं। ये उपाय धन सम्पत्ति के लिए भी हो सकते हैं अपने जीवन में आने वाली किसी भी बाधा पर विजय प्राप्ति के लिए ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से यह श्रेष्ठ दिवस हैं अतः इस दिन अपनी जन्म कुन्डली के अनुसार कोई भी भौतिक इच्छा पूर्ति के साधन हेतु उपाय करना अति उत्तम है।

अपने जीवन में उत्तरोन्तर उन्नति के लिए यदि प्राणी अपनी जन्म लग्न के अनुसार यदि कोई ज्योतिषीय उपाय मनोकामना पूर्ति हेतु करते हैं। तो वह शीघ्र ही फलित होता है। वर्तमान समय में कुछ समस्याएं सामान्य हैं। जैसे श्रेष्ठ कार्यक्षेत्र का प्राप्त नही होना अथवा कार्यरत कार्य क्षेत्र से असन्तुष्ट आर्थिक परेशानियां, स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां, विद्या प्राप्ति में बाधाएँ, विवाह में बाधाओं का आना और विवाह के पश्चात् परेशानियाँ, सन्तान प्राप्ति में बाधा इत्यादि। यदि दीपावली पर अपनी जन्म लग्न के अनुसार इनका उपाय कर लें तो हमारा जीवन सुखमय और आनंदमय हो जायेगा फिर हम अच्छा जीवन व्यतीत कर सकेंगें। अतः इस दीपावली पर आप जिस किसी भी समस्या से पीड़ित हैं तो अपनी जन्म पत्रिका की लग्न के अनुसार उस समस्या के निवारण हेतु पूर्ण भक्ति भाव से उपाय कर समस्या से छुटकारा पायें।

मेष लग्न धन समृद्धि उन्नति के उपाय – 1. हनुमान जी की नित्य उपासना करें एंव उन्हे चोला चढ़ायें। 2. नीलम अथवा कटहला रत्न धारण करें। 3. शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष को जल से सीचें और देशी घी दीपक जलाएं। 4. गले में तीन मुखी या सात मुखी रूद्राक्ष करें। 5. श्री यन्त्र की नित्य पूजा करें। 6. शुक्रवार का व्रत करें। और चांदी, सफेद वस्त्र, चावल आदि दान करें। 7. प्रातः काल भगवान सूर्य को अर्ध्य दें। 8. माणिक्य या सूर्य का उपरत्न धारण करें। 9. शनिवार एंव मंगलवार के दिन सुन्दर काण्ड का पाठ करें। 10. जहां भी हुनमान जी के मन्दिर का निर्माण हो रहा हो करे।

वृष लग्न और सुख समृद्धि के उपाय – 1. हनुमान चालीसा का पाठ करें। एंव शनिवार का व्रत करें। 2. छह मुखी एंव सात मुखी रूद्राक्ष धारण करें। 3. मंगलवार को अपने हाथ से गाय को भोजन करायें। 4. पन्ना रत्न या बुध का उपरत्न धारण करें। 5. स्फटिक से निर्मित श्री यन्त्र की नित्य पूजा उपासना करें तथा श्री सूक्त से अभिषेक करें। 6. शुक्रवार को नौ वर्ष से छोटी कन्याओं को भोजन करवायें एंव उपहार दें। 7. ऊँ अं अंगारकाय नमः मन्त्र का जाप करें। 8. पीपल को मीठे जल से सीचे। 9. मां लक्ष्मी को रोजाना ताजे दो गुलाब के फूल अर्पित करें। 10. गुरू यंत्र की पूजा करें।

मिथुन धन वाहन सुख समृद्धि हेतु उपाय – 1. पुखराज रत्न अथवा उसका उपरत्न धारण करें। 2. भगवान विष्णु की नित्य पूजा उपासना करें। 3. चार मुखी एंव पांच मुखी रूद्राक्ष धारण करें। 4. शुक्र मंत्र का जाप करें, ऊँ शुं शुक्राय नमः। 5. गुरूवार को पीपल के वृक्ष को जल से सीचकर घी का दिया जला दें ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय मन्त्र का नित्य जप करें। 6. त्रिकोण मंगल यंत्र की पूजा करें। 7. मां सरस्वती की नित्य पूजा करें। 8. गाय को हरा चारा खिलायें। 9. बुधवार को 9 वर्ष से छोटी कन्या को हरे वस्त्र दान करें।

कर्क लग्न और सुख समृद्धि के उपाय – 1. हनुमान जी की नित्य पूजा उपासना करें। 2. मंगलवार को मूंगा रत्न अथवा उपरत्न धारण करें। 3. बारह मुखी गौरी शंकर रूद्राक्ष धारण करें। 4. मंगलवार को सुन्दर काण्ड का पाठ करें। 5. भगवान शिव एंव उनके परिवार की नित्य पूजा उपासना करें। 6. सोमवार का व्रत करें एंव भगवान शिव की पूजा उपासना करें। 7. मोती और मूंगा रत्न धारण करें। 8. गुरू यन्त्र की पूजा करें। 9. तीन मुखी एंव पांच मुखी रूद्राक्ष धारण करें। 10. ऊँ अं अंगार काय नमः मंत्र का नित्य जप करें।

सिंह लग्न और सुख समृद्धि के उपाय – 1. स्फटिक श्री यंत्र को मन्दिर में स्थापित कर उसका नित्य पूजन करें। 2. रोजाना सूर्य को जल दें। 3. माँ लक्ष्मी एंव भगवान गणेश की नित्य पूजा उपासना करें। 4. पुखराज रत्न या उसका उपरत्न धारण रकें। 5. शुक्रवार को शुक्र की कारक वस्तुओं का दान करें। 6. बारह मुखी गौरी शंकर रूद्राक्ष धारण करें। 7. ऊँ शं शनैश्चराय नमः मंत्र का नित्य जप करें। 8. ऊँ बृं बृक्षस्पतयें नमः मंत्र का नित्य जप करें। हल्दी की भी माला का प्रयोग करें। 9. माणिक्य पुखराज और मूंगा के एक साथ लौकेट में बनाकर धारण करें। 10. रविवार का व्रत करें। तथा सूर्य को कारक वस्तुओं का दान करें।

कन्या लग्न और सुख समृद्धि के उपाय – 1. बुधवार के

शेष पेज 18 पर.....

शक्ति का पूजा कन्या पूजन

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

नवरात्र की अष्टमी और नवमी तिथि को कन्याओं के पूजन की परम्परा है। इस दिन दो से दस साल की कन्याओं को भोजन कराने वस्त्रादि देने की परम्परा है कन्या पूजन शक्ति पूजन का ही एक रूप है। नवरात्र मे पूजन व व्रत के साथ–साथ कुमारी कन्या के पूजन का विशेष महत्व है ऐसा माना जाता है कि यदि भक्त कुमारी कन्या का पूजन नहीं करते हैं तो नवरात्र व्रत और पूजन का फल प्राप्त नहीं होता है। नवरात्र की अष्टमी और नवमी तिथि के दिन कन्या पूजन का विशेष महत्व है भारत में नवरात्र के दौरान अष्टमी व नवमी तिथि को कन्या पूजन किया जाता है। मां दुर्गाशाक्ति साक्षात रूप हैं और वे कुवारी रूप में शत्रुओं का संहार करती हैं इसीलिए कन्याओं को भी मां दुर्गा का अंश माना जाता है। यही कारण है कि मां दुर्गा की सेवा के प्रतीक स्वरूप नवरात्र में व्रत रखने वाले या सामान्य पूजा आराधना करने वाले भी कन्या पूजन अवश्य करते हैं। कन्या पूजन से तार्त्पय है विविध अराधना और सेवा आदि कर्म से कन्या का सम्मान करना। रोली व आवल आदि विविध पूजन सामग्री से कन्याओं का पूजन मां की पूजा की तरह ही करें। कन्या पूजन करने से मां शक्ति प्रसन्न होती हैं तथा विघा लक्ष्मी सम्मान वैभव आदि की प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि कन्या पूजन करने वाले व्यक्ति के हद्रय से भय जाता रहता है उसके मार्ग में आने वाले सभी विघ्न समाप्त हो जाते है उस पर कोई संकट नही आता। उस पर मां दुर्गा की कृपा बरसती रहती है।

कन्या पूजन विधि– नवरात्र में कन्या पूजन के लिये जिन कन्याओं का चयन करें उनकी आयु दो वर्ष से दस वर्ष के बीच होनी चाहिए एक बर्ष या उससे छोटी आयु की कन्याओं को पूजन में बैठाना नही चाहिए क्योकि ये भोग आदि ग्रहण नही कर पाती हैं ना ही उन्हे भोग आदि के स्वाद का पता होता है। इसीलिए दो से दस वर्ष की कन्या का पूजन ही श्रेष्ठ और शास्त्रानुसार होता है। इस दिन कन्याओं को भोजन कराना उनके पैर पखारना वस्त्रादि देने का विधान है। मां का नित्यपूजन कर दुर्गा, सप्तशती का पाठ करें।

ऊँ हीं दुं दुर्गाय नमः की एक या पांच अथवा ग्यारह माला का जाप कर दशांश हवन करें। इन दिनो सात्विक भोजन करें। व्रत में फलाहार करे, जो कुछ भी ग्रहण करें उसका भोग देवी मां को भी लगायें। नवरात्र के दौरान आवश्यक नियमों का पालन करना श्रेयस्कर है।

कन्याओं का विविध रूप

दो वर्ष की कन्या को कुमारी कहा जाता है उसके पूजन से दुख और दरिद्रता दूर होती है।

तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्ति मानी जाती है। त्रिमूर्ति के पूजन से धन धान्य आता है परिवार का कल्याण होता है।

चार वर्ष की कन्या कल्याणी होती है। इनकी पूजा सुख समृद्धि दिलाती है।

पांच चार वर्ष की कन्या रोहिणी कही जाती है रोहिणी के पूजन से व्यक्ति रोग मुक्त हो जाता है।

छ वर्ष की कन्या कालिका की अर्चना से विद्या विनय, राज योग की प्राप्ति होती है।

सात वर्ष की कन्या चंडिका के पूजन से ऐश्वर्य मिलता है।

आठ वर्ष की कन्या शाम्भवी बाद विवाद में विजय दिलाती है। और प्रसिद्धि दिलाती है।

नौ वर्ष की कन्या दुर्गा कहलाती है और शत्रु संहार तथा असहाय कार्य में सिद्धि देती है।

दस वर्ष की कन्या सुभद्रा कहलाती है। इसकी सेवा से भक्तों के सारे मनोरथ पूर्ण होते है।

❋❋❋

यंत्रों को पुनः सिद्ध कराने हेतु

भविष्य निर्णय पाठकों के लिये एक सुनहरा अवसर। दीपावली पर गुरु जी (डा. महेश पारासर) द्वारा प्रत्येक वर्ष विशाल हवन किया जाता है जिसमें पुराने यंत्रों को विधिवत रुप से सिद्ध किया जाता हैं। अगर आप भी अपनें यंत्रों को पुनः सिद्ध कराना चाहते है तो भविष्य दर्शन कार्यालय पर सम्पर्क करें। मों. 9719666777, 9557775262

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

दीपावली पूजन विधि

श्री गणेशजी एवं लक्ष्मीजी की मूर्तियाँ अथवा चित्र, रोली, चावल, फूलमाला, पान, सुपारी, लौंग, छोटी इलायची, कलावा, धूपबत्ती, कपूर, रूई, घी, माचिस, मीठा तेल, खील-बतासे, पंच मेवा, खाँड़ के खिलौने, मिठाई, नुक्ती के लड्डू,फल, गंगाजल, दूध, दही, घी, शहद, बूरा, जनेऊ, घिसा हुआ चन्दन, रोली, बसने की पुड़िया, गोला, नारियल पानी वाला, वस्त्र चढाने वाले और रूपये थाली में सजा कर रखें।

श्री सरस्वतीजी श्री लक्ष्मीजी श्री गणेशजी

श्री हनुमान जी

श्री सरस्वती यंत्र	श्री लक्ष्मी वाहन यंत्र	श्री गणेश यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	श्री यंत्र	15 वाँ यंत्र
श्री विष्णु यंत्र	गोमती चक्र	पूजन सामिग्री पेज न. 02 पर

भवन के मुख्य द्वार पर

॥ श्री गणेशाय नमः श्री महालक्ष्म्यै नमः॥

शुभ 卐 लाभ

सिन्दूर में घी मिलाकर अनामिका जिसमें अंगूठी पहनते है उस उंगली से लिखें। एक साबुत बताशा सतिये के बीच में चिपका दें।

दीपावली पूजन कैसे करें

दीपावली लक्ष्मी जी का पर्व माना गया है। प्रत्येक कार्य की पूर्ति के लिये लक्ष्मी (धन) आवश्यक है, इस पूजा विधि का आधार यही मंत्र है।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे ।।

मंत्र का सरल भाव है कि मैं मंत्र, क्रिया, विधि और भक्ति आदि नहीं जानता हूँ जैसे भी आपकी पूजा की है आप उससे प्रसन्न होकर मेरा कल्याण करें।

पूजा विधिः सबसे पहले स्नान करके नया जनेऊ पहने, नये अथवा धुले हुए कपड़े पहने, टोपी लगावें। पूरब-पश्चिम अथवा उत्तर की ओर मुँह करके अपने आसन पर बैठ जायें। पत्नी को सीधे हाथ की ओर बैठावें। चुटिया में गांठ लगावें। चुटिया न होने पर चुटिया के स्थान को छू लें।

अपने सामने चौकी या पटरा अथवा जमीन पर अपने सीधे हाथ की ओर गणेश जी एवं उल्टे हाथ की ओर लक्ष्मी जी को चावल डाल कर विराजमान करें। उलटे हाथ की ओर घी का तथा सीधे हाथ की ओर मीठे तेल का (तिल का तेल) दीपक चावल डालकर रख दें।

अपने सामने पूजन की थाली, पंचपात्र आचमनी कटोरी, चम्मच आदि रख लें। दोनों दीपक एवं धूपबत्ती जलावें। चावल हाथ में लेकर हाथ जोड़ें और कहें- **'हे दीपक देवता** जब तक हम पूजन करें तब तक आप जलते रहना। चावल दीपकों के पास चढ़ा दें।

पान अथवा चम्मच से सबके ऊपर **ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय** कहकर पानी छिड़क दें। इसे पवित्रकरण कहते हैं। उल्टे हाथ से सीधे हाथ में जल लें और ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय कह कर तीन बार पी लें। (पानी पीकर सिर पर हाथ नहीं रखें) हाथ धो लें। यह आचमन है। जरा से चावल उल्टे हाथ में रखकर सीधे हाथ से ढक लें दस बार **"ओउम्"** कहें और अपने चारों ओर छोड़ दें इसे दिशा पूजन अथवा दिग्बन्धान कहते हैं।

नवग्रह की पूजा करें। चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। लड्डू, मिठाई, खील-बतासे चढ़ा दें।

गणेशजी विघ्नविनाशक, बुद्धि और विवेक के देवता हैं हर काम में सर्वप्रथम इनका पूजन किया जाता है। गणेश जी के पूजन का भाव है हम बुद्धि से धन अर्जित करें एवं विवेक से उसे खर्च करें। बुद्धिहीनता, अविवेकी ढंग, गलत तरीके से न तो धन कमायें न इस प्रकार खर्च करें। **ॐ एकदन्ताय विदमहे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रयोदयात्॥** अथवा **श्री गणेशायः नमः** कहकर गणेश जी पर चावल छोड़ दें।

प्रत्येक पूजा में गणेश जी के आवाहन के बाद संकल्प करने की परम्परा है। यह संकल्प क्या है ? जब हमारे मन में कोई विचार उठता है तब बुद्धि एवं हृदय से स्थिर (पक्का) करते हैं। ब्रह्माण्ड (मस्तिष्क) ने शरीर के अंगों को प्रेरित किया और विचार कार्य रूप में बदल जाते हैं। इसे संकल्प कहते हैं। अच्छे कार्य उद्‌घोषणापूर्वक किये जाते हैं। कुकृत्य (बुरे काम) छिपकर करने का मन होता है कोई देख न ले अच्छे संकल्प करने से मनोबल बढ़ता है, दैवीय शक्तियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता है। संकल्प में सम्वत्, मास, पक्ष, तिथि, दिन, पर्व, गोत्र एवं नाम बोलकर अहम्‌करिष्ये कहा जाता है।

सीधे हाथ में जल, चावल, फूल, रुपये रखें पत्नी साथ हों तो उनका हाथ अपने हाथ के नीचे लगावें, बोलें-श्री विष्णु, श्री विष्णु, श्री विष्णु। शुभ सम्वत् 2071, कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां गुरुवासरे अमुक गोत्रेत्पन्न (गोत्र और अपना नाम बोलें) पत्नी साथ हो तो सप्तनीकोहम् परिवार हो तो सपरिवारस्योहंम, (यदि मित्र मण्डली हो तो)इष्टमित्रसहितोहम्। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु गणेश लक्ष्मी पूजनम् अहम करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ में रखी वस्तुएँ गणेश जी के समीप रख दें। अब हाथ में चावल लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नि च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् अथवा ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः ॥ कहकर लक्ष्मी जी पर चावल चढ़ावें।

दीपावली पूजन का समय सन् 2015

11-11-2015 बुधवार के दिन पूजन समय प्रातः 7:02 से 11:25 तक, दोपहर 1:24 से 4:04 बजे तक, सांय 5:40 से 9:51 बजे तक, रात्रि 12:14 से 4:44 बजे तक के मुहूर्त रहेंगें। जिसमे सर्वश्रेष्ठ पूजन समय प्रातः 7:02 से 9:18 बजे तक, प्रातः 10:40 से 11:25 बजे तक, सायं 7:06 से 9:51 बजे तक एवं रात्रि 3:18 से 4:44 बजे तक रहेंगें। जिसमें अभीष्ट धन लाभ, सिद्धि प्रद रहेगी। राहुकाल का समय दोपहर 12:02 से 1:23 तक।

आवाहन्- सर्व सिद्धि की अधिष्ठात्री देवी धन धान्य समृद्धि दाता माँ मेरे इस स्थान पर आकर आसन पर विराज कर मेरे द्वारा की जाने वाली पूजा स्वीकार करें। पुष्पासनम् सर्मपयामि बोल कर चावल, फूल चढ़ा दें। एक दौने में फूल, चावल, जल गणेश जी -लक्ष्मी जी के आगे रखकर कहें अर्घ्यम समर्पयामि गंगाजल (पानी) दोने में रखकर कहें ''आचमनीयम् समर्पयामि ''तदन्तर शुद्ध जल से स्नान करावें।'' स्नानम् समर्पयामि ''इसके बाद पारद के गणेश जी -लक्ष्मी जी या चाँदी का रूपया कटोरे में रखकर दूध, दही, घी, शहद एवं बूरा इच्छानुसार चढ़ावें और कहें'' पंचामृत स्नानम् समर्पयामि ''शुद्ध जल से स्नान करावें'' स्नानम् समर्पयामि ''वस्त्र से पोंछकर पात्र में रख लें और नवीन (नया) वस्त्र पहनावें'' वस्त्रम् समर्पयामि ''मंगल प्राप्ति हेतु मंगलसूत्र (मौली) चढ़ावें'' मंगल सूत्रम् समर्पयामि ''गणेश जी को जनेऊ पहनावें'' यज्ञोपवीतम् समर्पयामि ''लक्ष्मी जी को मोती की माला पहनावें'' मुक्ता मालाम् समर्पयामि ''गणेश जी पर चन्दन लक्ष्मी जी पर रोली'' गंधम् समर्पयामि ''चावल लगावें'' अक्षताम् समर्पयामि ''फूलमाला पहनावें'' पुष्पमाल्याम् समर्पयामि ''मीठा, खील, बतासे, खाड़ के खिलौने, पाँचों मेवा, आदि थाली में रखकर कहें'' भोजनम् समर्पयामि ''जल चढ़ावें'' आचमनीयम समर्पयामि ''फल चढ़ावें'' फल समर्पयामि ''गोला या नारियल चढ़ावें'' अखंड ऋतुफलम् समर्पयामि ''पान, सुपारी, लौंग, इलायची, कपूर'' ताम्बूल पुंगीफल आदि समर्पयामि ''दक्षिणा चढ़ावें'' शुभ दक्षिणाम् समर्पयामि ''प्रणाम करके मन से परिक्रमा करें। पुष्प हाथ में लेकर प्रार्थना करें।

श्री गणेशाम्बिका प्रसन्न होकर मेरी तथा मेरे परिवार, इष्ट मित्र एवं सम्पूर्ण भारत राष्ट्र की रक्षा करें तथा भगवती लक्ष्मी माँ स्थिर रूपेण इस भवन में एवं व्यापारादि के स्थान में निवास कर सर्वत्र हर्ष विजय प्रदान करें।

कुछ व्यक्तियों के यहाँ हठरी का पूजन होता है ''हठरी पर दीपक जलावें चावल हाथ में ले लें और कहें '' हठरी दैव्यै आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ''चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। रूपया, लड्डू, मिठाई, खील-बतासे, हठरी में रख दें। दुकान, कारखाना, मिल, दफतर गद्दी आदि स्थानों पर बही खाता, कलम, दवात, तिजोरी (कैश बाक्स, गल्ला), मशीन, तराजू, बॉट आदि का पूजन होता है उसे ऊपर लिखे क्रमानुसार अथवा केवल चावल या खील चढ़ाकर सम्पन्न करें। इसके बाद कमल गट्टे की माला से कुवेर मंत्र का 108 बार जाप करें।

ॐ यक्षाय कुबेराय धन धान्य समृद्धि करो पुण्य पुण्य स्वाहा

तिजोरी, कैश बॉक्स या गल्ले में बसने की पुड़िया (पंसारी के यहाँ मिलेगी) लाल कपड़े में बाँध कर रख दें। अब एक थाली में ग्यारह दीपक तेल के जलावें और खीलें हाथ में लेकर कहें'' ॐ दीपेभ्यो नम:''खीलें दीपकों पर चढ़ा दें। घर में, भगवान के मन्दिर में , रसोई में, सब कमरों में, आँगन, छत, द्वार, नाली के पास, चौराहा, कुँआ, हैण्डपम्प, मन्दिर, पीपल के पेड़ के नीचे आदि स्थानों पर रखें। थाली में सतिया लगाकर तथा फूल डालकर आरती करें।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद, हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

शेष पेज 06 से आगे............

गीर्देवतेति गरुडध्वज भामिनीति शाकम्भरीति शशिशेखर-वल्लभेति।
सृष्टि-स्थिति-प्रलय-सिद्धिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै।।10।।
श्रुत्यै नमस्त्रिभुवनैक-फलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीय गुणाश्रयायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र-निकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै।।11।।
नमोऽस्तु नालीक-निभेक्षणायै नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत-सोदरायै नमोऽस्तु नारायण-वल्लभायै।।12।।
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि साम्राज्यदान-विभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्-वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यत्।।13।।
यत्कटाक्ष- समुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
सन्तनोति वचनाऽङ्गमानसै-स्त्वां मुरारि हृद्येश्वरीं भजे।।14।।
सरसिज-निलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक-गन्ध- माल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन-भूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।15।।
दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-स्वर्वाहिनीविमलचारु- जलप्लुताङ्गिम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-लोकाधिराजगृहिणीम मृताब्धिपुत्रीम्।।16।।
कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूर-तरङ्गितैरपाङ्गैः
अवलोकय मामकिचनानां प्रथमं पात्रम कृत्रिमं दयायाः।।17।।
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुधन-भोगभागिनो भवन्ति ते भुविबुधभाविताशयाः।।18।।

※※※ श्रीमदाद्यशङ्कराचार्यविरचितं कनकधारास्तोत्रं समाप्तम् ※※※

सुख, शांति एवं समृद्धि के लिये करें स्फटिक लक्ष्मी गणेश जी की स्थापना

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य एवं कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

स्फटिक प्राचीन और वर्तमान संस्कृतियों में सबसे पवित्र पत्थरों में से एक है। स्फटिक हिमालयों की खानों से निकाला हुआ चमकदार व पारदर्शी पत्थर है। यह अनेक गुणो से भरपूर होता है। यह एक चमत्कारी पत्थर है। इसमें विशिष्ट ऊर्जा होती है। स्फटिक दो प्राकृतिक तत्वों ऑक्सीजन व सिलिकॉन से बना है। स्फटिक का प्रयोग सदियों से हमारे संत, महात्मा एंव सिद्ध व्यक्ति अपनी प्राण ऊर्जा को विकसित करने, वातावरण एंव रोगों से बचने के लिए व नकारात्मक ऊर्जा को कम करने के लिए करते थें।

स्फटिक चिकित्सीय उपचार के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है। ज्योतिष के अनुसार स्फटिक वीनस के लिए सम्बन्धित है। ये शरीर में विधुत संतुलन और चिन्ता दूर करता है। इस पत्थर को संस्कृत में स्फटिक और फारसी में विलौर नाम से जाना जाता है। यह पत्थर स्वभाव से ठण्डा होता है। जो कि मूर्तिया, यंत्र व अन्य वस्तुओं को बनाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। माना जाता है। कि भगवान शिव और पार्वती इस पत्थर में रहते है। स्फटिक सभी आकारों में उपलब्ध रहता है। स्फटिक से बने गणेश जी लक्ष्मी जी स्थापित करने से सुख शांति, समृद्धि, व्यापार वृद्धि लक्ष्मी प्राप्ति, पदोन्नति तथा मानसिक शांति प्रदान करता है। स्फटिक में दिव्य शाक्तियां और ईश्वरीय शक्तियां मौजूद होती है। स्फटिक घर में तनाव पूर्ण माहौल को कम करता है। और शांति प्रदान करता है।

स्फटिक से बन गणेश लक्ष्मी जी घर में सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण करते है। जिसमें पूजा करने में एकाग्रता आती है। ये गणेश लक्ष्मी जी जीवन में सफलता प्राप्त कराने में सहायक होते है। स्फटिक गणेश लक्ष्मी शक्तिशाली चिकित्सा के रूप में प्रयोग किये जाते है। व बाधाओं और नैगेटिवीटी को तोड़ने में मदद करते हैं। इनकी आराधना से धन–धान्य, शांति और सद्भावना आती है। अध्ययन कक्ष में स्फटिक से बने गणेश लक्ष्मी जी स्थापित करने से एकाग्रता बढ़ती है। अतः दस दीपावली पर्व पर स्फटिक से बने लक्ष्मी गणेश जी स्थापित करके सुख, धन–लाभ एंव उनकी कृपा प्राप्त करें। ❋❋❋

अपना व्यवहार बदलिए ग्रहों का व्यवहार भी बदलेगा

सुरेश अग्रवाल
आगरा

प्रातः काल सूर्योदय से पहले उठने से लेकर रात में सोने तक के समय में हम अनेक प्रकार की जीवन चर्याओं में व्यस्त रहते है। अपने परिवार के सदस्यों के साथ लोक व्यवहार भी करते है। क्या आप जानते है। कि मनुष्य के क्रिया कलाप और परिवार के सदस्यों के साथ किया गया व्यवहार ग्रहों को प्रभावित करता है? अतः हम अपनी आदतों और व्यवहार में सुधार ला सकें तो हम अपनें ग्रहों का सम्मान कर रहे होते हैं। और ग्रहों के कोप से बच सकते है। आइए हम इनको अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें:–

1. जो व्यक्ति सुबह उठने के बाद अपने बिस्तर के चादर, कम्बल, तकिया आदि को पलंग का बिखरा हुआ छोड़ देते है– यहाँ तक कि अपने पहने हुए वस्त्र भी वहीं छोड़ देते है। ऐसे लोगों की पूरी दिन चर्या कभी भी व्यवस्थित नहीं रहती है। ऐसे लोगों का राहू और शनि हमेशा खराब ही रहेगां इससे बचने के लिए स्वंय पलंग के बिस्तर समेट कर निर्धारित स्थान पर रख दें।

2. यदि घर की स्त्री प्रतिदिन उठते ही सर्वप्रथम मुख्य द्वार का ताला खोलकर अपने इष्ट देव की प्रार्थना करते हुए दहलीज पर एक देव की प्रार्थना करते हुए दहलीज पर एक लोटा जल डाले तो घर में सुख शान्ति बनी रहती है। धन की देवी लक्ष्मी के स्वागत की यही परम्परा है– घर में वह सदैव विराजमान रहेगी।

3. प्रातः काल उठते ही अपनी दोनों हथेलियों के दर्शन करें और पलंग से उतरते समय पृथ्वी माता के चरण स्पर्श करें।

4. तत्पश्चात् अपने घर के बुजुर्गो के पैर छूकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें अथवा उनके चित्र को प्रणाम करें।

5. अप्रत्याशित परिस्थितियों को छोड़कर, जहाँ तक सम्भव हो, मंगलवार, गुरूवार और शनिवार को घर का कोई भी सदस्य न तो नाखून बाल काटें और नही शेव बनाएं।

6. घर के प्रत्येक सदस्य अपने अपने अन्तः वस्त्र कच्छा, बनियान आदि स्वंय धोने की आदत डालें, तो उन्हे पितृ दोष का सामना नहीं करना पड़ेगा।

7. पैरों की सफाई पर हमें हर वक्त खास ध्यान देना चाहिए।

शेष पेज 19 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

पाँच त्यौहारों का पर्व है दीपावली

श्री श्री भगवान पाराशर
कर्मकाण्ड महामहोपाध्याय

धनतेरस– यह त्यौहार कार्तिक पक्ष त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस तरह से यह दीपावली के आगमन की पूर्व सूचना देता है। इस दिन घर में लक्ष्मी का आवास होता है। इस दिन घर में नई वस्तु खासकर बर्तन सोना चाँदी खरीद कर लाने का विधान एंव परम्परा है खरीदी गयी वस्तु को घर लाकर पंचोपचार द्वारा पूजन किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इस दिन चाँदी के बर्तन या चाँदी की बनी वस्तु खरीदने से मां लक्ष्मी प्रसन्न होकर वहां चिर काल तक स्थिर बनी रहती हैं। इस दिन धन का अपव्यय नहीं किया जाता तथा किसी को उधार भी नहीं दिया जाता। इसलिए कुछ लोग व्यापार में लेन देन से भी बचते हैं। इस दिन धन्वंतरि वैध समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे इसलिए धन तेरस को धन्वंतरी जयंती भी कहा जाता है इस दिन सुबह स्नान कर प्रदोष काल में घाट, गौशाला, कुंआ आदि स्थानों पर दीप प्रज्वलित करना चाहिए। इस दिन वैदिक देवता यमराज का भी सम्पूर्ण विधि विधान से पूजन किया जाता है। महिलांए एक दीपक में तेल डालकर चार बत्तियां जलाती है। और जल, रोली, चावल, गुड आदि नैवेध सहित दीपक जलाकर यमराज की पूजा की जाती है। धनतेरस के दिन विधिवत यम पूजन व दीप दान करने से अकाल मृत्यु का भय संमाप्त हो जाता है। धनतेरस के दिन धन्वंतरित पूजन यम–पूजन व दीप दान करने की प्रथा का पालन किया जाता है।

नरक चतुर्दशी– रूप चतुर्दशी, प्रेत चतुर्दशी एक ही हैं। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी का दिन नरक चतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है। कुछ जगहो पर इसे छोटी दीपावली के रूप में तथा अधिकांश स्थानों पर हनुमान जंयती के रूप में मनाते हैं। इस दिन कुबेर की भी पूजा की जाती है। इस दिन नरक से मुक्ति पाने के लिए प्रातः काल सूर्योदय से पहले उठकर तेल आदि लगा कर आपामार्ग पौधे सहित जल से स्नान करना चाहिए इससे शरीर से अच्छी सुगन्ध आने लगती है। और व्यक्ति का स्वरूप तेजोमय होकर उसका रूप भी निखर आता है। इसलिए इसे रूप चतुर्दशी कहा जाता है। कि इस दिन जो लोग सूर्योदय से पूर्व उठकर नहीं नहाते, वर्ष भर मलिनता व दरिद्रता का शिकार रहते हैं। इसी दिन शाम को यमराज के लिए दीप दान किया जाता है। जो व्यक्ति इस पर्व पर दीपदान करता है, उसे प्रेत वाधा कभी नही सताती इसलिए इसे प्रेत चतुर्दशी भी कहते हैं। माना जाता है कि इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने नरकासुर दैत्य का संहार किया था।

समाज में इस पर्व को सफाई स्वच्छता से जोड़ा जाता है। अतः इस दिन घर का कूड़ा करकट साफ कर नरकीयता से छुटकारा पाया जाता है। संध्या को दीपक जलाए जाते हैं। तभी इसे छोटी दीवाली की संज्ञा दी गयी है। दीपक तो वास्तव में तीन दिन (धन तेरस, नरक चतुर्दशी व दीपावली) लगातार प्रज्जवलित करने चाहिए। यह भी माना है कि भगवान वामन ने राजा बलि का राज्य सम्पूर्ण पृथ्वी व बलि के शरीर को तीन पगो में माप लिया था इसलिए तीनों दिन दीपक जलाने का विधान है। इस दिन दान करने से लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। इस दिन निशामुखी वेला में दीप दान भी करना चाहिए।

दीपावली– कार्तिक मास की अमावस्या के दिन दीपावली पर्व मनाया जाता है। इस दिन भगवती महालक्ष्मी का उत्सव विशेष रूप से मनाया जाता है। कार्तिक अमावस्या के दिन भगवान श्री रामचन्द्र चौदह वर्ष का बनवास भोग कर रावण का संहार कर अयोध्या पधारे थे। इस शुभ अवसर में अयोध्या वासियों ने घर घर दीपक जलाकर सप्ताह भी खूब प्रकाश किया तथा खुशियां मनायी थी। तब से हर वर्ष कार्तिक अमावस्या पर दीप जलाकर उन खुशियों को दोहराते है। हिन्दुओं के लिए इस पर्व का अधिक महत्व है वैसे पूरे भारतवर्ष में और अन्य देशो में भी जहां भारतीय मूल के लोग हैं यह वर्ष सभी संप्रदायों एंव धर्मों को मानने वालों के द्वारा हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है। भारत के चार बडे त्योहारों में दीपावली प्रमुख है। वैश्यों की प्रधानता से लक्ष्मी पूजन के मान तीनों रूपों को पूजा जाता है। लक्ष्मी के तीन रूप अधिभौतिक, आध्यात्मिक तथा अधिदैविक को उल्लासमय उत्सव से प्रकट किया जाता है लक्ष्मी जी के अधिभौतिक रूप का तात्पर्य धन सम्पत्ति से है आध्यात्मिक रूप शोभा है जबकि अधिदैविक रूप भगवती पद्मा

शेष पेज 19 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

दीपावली पर कैसे करें रंग व वास्तु का सही प्रयोग

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

निर्माण वास्तु सम्मत होने पर भी कई बार व्यक्ति को कष्ट होता है, तो उस स्थिति में यह पाया जाता है कि व्यक्ति उस घर पर सही प्रयोग नहीं कर रहा होता। जैसे गलत दिशा मे सिर करके सोना, गलत दिशा की ओर मुंह करके कार्य करना, गलत कमरे में कार्य करना, किसी दिशा विशेष में उसके शत्रु ग्रहों से संबंधित सामान रखना, गलत दिशा में धन रखना व पूजा करना, गलत रंगो का प्रयोग करना, सज्जा वास्तु अनुरूप न करना, चित्रों आदि को गलत दिशा में लगाना आदि। इन प्रयोग संबंधी दोषों के भी कई बार बहुत भयंकर परिणाम देखने में आयें है।

सुखी जीवन के लिए प्रयोग, सज्जा व रंग संबंधी सुझाव

1. पूजा घर ईशान कोण में ही रखें।
2. धन की तिजोरी का मुंह उत्तर दिशा में ही रखें।
3. रसोई आग्नेय कोण में बनांए।
4. खाना पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके खांए।
5. मुख्य शयनकक्ष दक्षिण में बनांए।
6. ईशान कोण में लोहे की अलमारी लोहे का फर्नीचर व कबाड़ आदि न रखें।
7. ब्रह्म स्थान में जूठे बर्तन, चप्पल–जूते व कबाड़ न रखें।
8. सीढ़ियों के नीचे रसोई, शौचालय व मंदिर न बनाएं।
9. पूर्व, उत्तर व ईशान में पहाड़ों का चित्र न लगाएं।
10. पहाड़ों का चित्र दक्षिण, पश्चिम या नैऋत्य में लगाएं।
11. झरना, नदी, फव्वारा, मछली घर के चित्र या असली के पूर्व, उत्तर या ईशान में लगाएं।
12. खिडकी या दरवाजे की तरफ पीठ करके न बैठें न खाना बनाएं।
13. ईशान व पूर्व दिशा में कूड़ा करकट पत्थर व मिटी के टीले आदि न रखें।
14. उत्तर दिशा में गोबर का ढेर न रखें।
15. पश्चिम व नैऋत्य दिशा में आग न जलांए।
16. पूजा घर में हाथ से बड़ी मूर्तियाँ न रखें।
17. ड्राइंग रूम के शो केस में भगवान की मूर्तियों को पूजा घर में रख कर बाकायदा उनकी पूजा करें।
18. घर में बंद घड़ियां न रखें, उन्हे चालू करायें या बेच दें।
19. बच्चों का अध्ययन कक्ष वायव्य में न बनाएं।
20. नौकरों को वायव्य में न ठहराएं।
21. नैऋत्य में मेहमानों को न ठहराएं।
22. विवादों व मुकदमों के कागजात आग्नेय में न रखें।
23. घड़ियों को उत्तर व पूर्व की दीवार पर लगाएं।
24. मुख्य द्वार पर यदि गणेश जी का चित्र लगाना हो तो वैसा ही चित्र उस दीवार के अंदर की तरफ भी लगांए।
25. घर में हिंसक जीव–जंतुओ के चित्र उदासी वाले चित्र व युद्ध के चित्र न लगाएं।
26. ताजे फूल व फलों के चित्र को भी घर में लगाने से वातावरण सुंदर व आनंददायक लगता है।
27. घर के सभी सदस्यों का एक सयुंक्त चित्र पूर्व की ओर लगाएं एवं दिवगंत पूर्वजों के चित्र दक्षिण दिशा में लगाएं।
28. घर का भारी सामान नैऋत्य दिशा में लगाएं।
29. घर के सभी दर्पण विभिन्न कक्षों के उत्तर या पूर्व की दीवार पर ही लगाएं।
30. दिशाओं के ग्रहों के अनुरूप उचित रंगो का प्रयोग उस दिशा के कक्ष में करें।

❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, 9557775262

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

कूट्टू वेजी कबाब

रेसेपी न. 2

इ. शुभी गुप्ता
आगरा

व्रत के लिये फलाहारी कूट्टू वेजी कबाब –:

सामग्री–:

कट्टू आटा	–	1 कटोरी
मसले उबले आलू	–	2
बारीक कटा टमाटर	–	1
बारीक कटी शिमला मिर्च	–	1
कुटी काली मिर्च	–	1/2 Tsp
सैंदा नमक	–	स्वादानुसार
तलने के लिए तेल		

विधि–: एक नोन स्टिक पैन में दो चम्मच तेल डालकर गर्म करें। अब इसमें कूट्टू आटा डाल कर थोड़ा भून लें। इसे एक प्लेट में निकाल लें। अब इसमें मसले हुए आलू और ऊपर से शिमला मिर्च, टमाटर डालें। साथ ही नमक और काली मिर्च डालकर अच्छे से मिलाएं। मसलते हुए आटा जैसा गूंद लें। ज्यादा सख्त न करें। जरूरत पड़ने पर थोड़ा पानी प्रयोग करके मुलायम करें। अब इस आटे के समान भाग करें। हर हिस्से को गोल–गोल कबाब का शेप दें। सभी कबाब बनने पर एक नौन–स्टिक पैन में तेल गर्म करें और इन कबाब को शैलो फ्राई करें। गोल्डन कलर आने तक दोनों तरफ सेकें। गर्मागर्म सर्व करें।

इस कबाब का मजा आप फलाहारी नारियल और फलाहारी पुदीना चटनी के साथ लें।

फलाहारी नारियल चटनी की विधि–:

सामग्री–:

कद्दूकस नारियल	–	2 कटोरी
हरी मिर्च	–	2–3
सैंदा नमक	–	स्वादानुसार
दही	–	1 कटोरी
करी पत्ता	–	1 कटोरी

विधि–: सभी सामग्री को मिक्सर के चटनी जार में डालें और अच्छे से बलेन्ड करें। यदि जरूरत लगे तो थोड़ा पानी डाल लें। चटनी की कंस्सिटेन्सी आने तक मिक्सर में चलाए। कटोरी में निकाले और सर्व करें।

फलाहारी पुदीना चटनी–:

सामग्री–:

पुदीना पत्ते	–	2 कटोरी
हरी मिर्च	–	2–3
सैंदा नमक	–	स्वादानुसार
काली मिर्च	–	1/2
कच्चा आम	–	2–3
भूने टमाटर	–	2–3

विधि–: मिक्सर के चटनी जार में पहले कच्चा आम और भूने टमाटर डालकर चलाए। अच्छी तरह से पिस जाने पर पुदीना पत्ते और अन्य सामग्री डालकर चलाए। 2–3 मिनट चलाने के बाद

चटनी निकालकर एक कटारी में सर्व करें।

आप सभी पाठकों को नवरात्री की हार्दिक शुभकामनाएँ। सभी स्वस्थ रहें और आनन्दित रहें।

❋❋❋

1500/– की खरीद पर पायें
15% की छूट
3100/– की खरीद पर पायें
25% की छूट

ज्योतिष❖, वास्तुशास्त्र एवं अंकशास्त्र
सीखना हुआ अब बहुत ही आसान।
सीखें अब मात्र 3 महीने में।
बैच अक्टूबर 2015 से प्रारम्भ
(❖केवल शनिवार एवं इतवार)
फोन न. 9719666777, 9557775262

16 अक्टूबर - 15 नबम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस मास मे क्रोध शक्ति मे वृद्धि होगी। इस मास में स्थान परिवर्तन होने की सभांवना रहेगी। फालतू के विवादो से बचें। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। पत्नि सुख की प्राप्ति होगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– आर्थिक लाभ का सुख प्राप्ति होगा। मित्रों से अनबन होने की स्थिति बनेगी। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। आय से ज्यादा व्यय करेगें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। सम्पत्ति का लाभ होगा। मित्रों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। फालतू के विवादो से बचें। मास के अन्त में हानि होने का भय रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– नेत्र कष्ट रहेगा। धन की हानि होना भी संभव हैं। कार्य में हानि होने की सभांवना रहेगी। क्रोध शक्ति की वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे–इस मास में वायु विकार जैसे रोग से ग्रस्त होने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन होने की सभांवना रहेगी। मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। आय से ज्यादा व्यय करेगें।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में आपका स्वास्थ्य मधयम रहेगा। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में आपको हानि होने का भय रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते–पत्नि को शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस मास में मानसिक तनाव अधिक रहेगा। क्रोध शक्ति की वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। फालतू विवादों से परेशान रहेगें।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– पत्नि से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। वायु विकार जैसे रोग से ग्रस्त होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति को लेकर विवाद होगें। व्यवसाय में हानि होना भी संभव हैं।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में आर्थिक हानि की प्राप्ति होगी। रोग होने का भय रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में हानि होना भी संभव हैं। अपमान होने का भय रहेगा। व्यर्थ के खर्चे बढ़ जायेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में क्रोध शक्ति की वृद्धि होगी। धन लाभ होना भी संभव हैं। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। शत्रु से तनाव रहेगा। सम्पत्ति को लेकर विवाद होगें।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। सन्तान को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। नेत्र कष्ट होने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अक्टूबर	नवम्बर
16. श्री गणेश चतुर्थी व्रत, तृतिया नवरात्र **18**. ललिता पंचमी व्रत **19**. छठा नवरात्र **20**. सरस्वती पूजन **21**. दुर्गाष्टमी **22**. महानवमी, विजयदशमी **24**. पापकुशा एकादशी व्रत **25**. प्रदोष व्रत **27**. काजौगरी व्रत, शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नान प्रारम्भ **30**. करवाचौथ व्रत, श्री गणेश चतुर्थी व्रत **31**. श्रीमती गांधी पु. दि., सरदार बल्लभ भाई पटेल जं.	**1**. अहोई अष्टमी **7**. रमा एकादशी व्रत **9**. प्रदोष व्रत, धन तेरस (धनवन्तरी जयंती) **10**. नरक चौदश **11**. श्री महालक्ष्मी पूजन (दीपावली) **12**.. श्री गोवर्धन पूजा (अन्नकूट) **13**. भाई दूज **14**. पं. जवाहरलालनेहरू जन्म दि. बाल दिवस **15**. श्री विनायक चौथ

ग्रहारम्भ मुहूर्त

अक्टूबर –23, 24 **नवम्बर**– 13,

गृह प्रवेश मुहूर्त

अक्टूबर– 23 **नवम्बर**– 13,

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अक्टूबर– 21, 23, 25

नवम्बर– 13,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अक्टूबर– 23, 30

नवम्बर– 2, 9, 13,

सर्वार्थ सिद्ध योग

अक्टूबर	नवम्बर
16 ता. प्रांत: 09:43 से 17 ता. प्रात: 06:00 बजे तक	02 ता. दोपहर 04:25 से 03 ता. प्रात: 06:08 बजे तक
18 ता. दोपहर 01:12 से 19 ता. प्रात: 06:00 बजे तक	03 ता. सांय 05:53 से 04 ता. प्रात: 06:08 बजे तक
25 ता. प्रात: 07:40 से 26 ता. प्रात: 06:06 बजे तक	08 ता. सू.उ. से 09 ता. प्रात: 08:08 बजे तक
27 ता. सू.उ. से रात्रि 11:23 तक	12ता. दोपहर 03:42 से 13 ता. सांय 05:26 बजे तक
28 ता. रात्रि 08:48 से 29 ता. प्रात: 06:06 बजे तक	15 ता. सू.उ. से रात्रि 07:38 तक

16 नवम्बर - 15 दिसम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस माह मे धन की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– पत्नि को लाभ की प्राप्ति होगी। कार्य से निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। वृथाविवाद से दूर रहें। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– कार्य से निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा। यात्रा में कष्ट होना भी संभव है। रोग का भय रहेगा। शत्रु प्रबल होंगे।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– पुत्र को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। भाइयों का सुख प्राप्त होगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। आपके प्रियजनों या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। आय के बराबर व्यय होगा। जमीन-जायदाद संबंधित परेशानी लगी रहेंगी। यात्रा में कष्ट से बचें। रोग का भय रहेगा। चोट से बचें।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू–घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। अर्थ लाभ होकर भी हानि होने का भय रहेगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। परेशानी होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगा। मास के अन्त में स्वास्थ्य अधिक खराब रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। योजनाओं से लाभ होगा। इस मास में आप शत्रुओं पर हावी रहेंगे। यात्रा होना भी संभव है। अपमान होने का भय रहेगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे। शत्रुओं की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। भाइयों का सुख प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। व्यापार में धन हानि होने की संभावना रहेगी। पति का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद
हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

नवम्बर	दिसम्बर
16. पाण्डव पंचमी **17**. सूर्य षष्ठी **18**.जलराम जं. **19**. गोपाष्टमी, इंदिरागांधी जं. **20**. अक्षय नवमी **22**. देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह **23**. गुरुण द्वादशी (उड़ीसा), श्री सांई बाबा जयंती, प्रदोष व्रत **25**. बैकुण्ठ चौदस, पूर्णिमा व्रत, गुरु नानक जं. **29**. श्री गणेश चतुर्थी व्रत	**1**. विश्व एड्स डे **2**. काल भैरवाष्टमी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ज. दि., विकलांग दि. **4**. भारतीय नौ सेना दिवस **7**. उत्पत्ति एकादशी व्रत, भा. झण्डा दि. **8**. प्रदोष व्रत **10**. मानवाधिकार दिवस **11**. अमावस्या व्रत **15**. सरदार पटेल पु. दि.

ग्रहारम्भ मुहूर्त

नवम्बर– 23
दिसम्बर– 14,

गृह प्रवेश मुहूर्त

नवम्बर– 23 **दिसम्बर** – नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

नवम्बर– 19, 21, 22, 23, 26
दिसम्बर – 14,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

नवम्बर– 18, 22, 27
दिसम्बर – 6, 7, 14,

सर्वार्थ सिद्ध योग

नवम्बर	दिसम्बर
22 ता. सू.उ. से दोपहर 02:27 बजे तक 24 ता. सू.उ. से प्रातः 09:57 बजे तक 25 ता. प्रातः 07:37 से 26 ता. प्रातः 06:21 बजे तक 30 ता. सू.उ. से रात्रि 01:23 तक	01 ता. सू.उ. से 02 ता. प्रातः 04:18 बजे तक 06 ता. सू.उ. से दोपहर 03:31 बजे तक 09 ता. रात्रि 10:56 से 10 ता. रात्रि 12:23 बजे तक

शेष पेज 8 से आगे.....

दिन बुध की कारक वस्तुओं का दान किन्नरो को करें। 2. गौरी शंकर रूद्राक्ष धारण करें। 3. भगवान गणेश की नित्य पूजा उपासना करें। तथा उनसे सम्बन्धित मंत्रो का जाप तथा स्त्रोतो का नित्य पाठ करें। 4. पन्ना अथवा उसका उपरत्न धारण करें। 5. हनुमान जो की नित्य पूजा उपासना करें। 6. शनिवार को शनि की कारक वस्तुओं का दान करें। 7. ऊँ शं शनैश्चराय नमः मंत्र का नित्य जप करें। 8. बुधवार का व्रत करें तथा बुध मंत्र का जाप करें। 9. गुरू यन्त्र की पूजा करें। गुरू यंत्र का जप करें। 10. गाय को हरा चारा खिलायें।

तुला लग्न और सुख समृद्धि के उपाय –: 1. भगवान शिव की नित्य पूजा उपासना करें। 2. कर्तिकेय भगवान की नित्य पूजा उपासना करें एंव उनके निमित्व मंगलवार का व्रत करें। 3. मंगलवार को अपने हाथ से गाय को भोजन कराए। 4. नीलम अथवा उसका उपरत्न धारण करें। 5. अपने मंदिर में स्फटिक के श्री यंत्र की स्थापना कर नित्य उसका जल अथवा दूध से श्री सूक्त के पाठ करते हुए अभिषेक करें। 6. ऊँ अं अंगारकाय नमः मंत्र का नित्य जप करें। 7. सोमवार का व्रत करें तथा द्वादश ज्योतिर्लिंगो के दर्शन कर वहां भगवान शिव का पूजन करें। 8. हीरा पन्ना नीलम रत्नो या उपरत्नों का लॉकेट गले में धारण करें। 9. बारहमुखी, गौरीशंकर रूद्राक्ष धारण करें। 10. शनिवार को सांयकाल भगवान शिव के मंदिर में जाकर तेल से शिवलिंग का अभिषेक करें।

वृश्चिक लग्न धन समृद्धि के उपाय –: 1. एक मुखी रूद्राक्ष धारण करें। 2. पानी में तांबे सिक्के बहायें तथा स्वंय ताबें का छल्ला धारण करें। 3. रविवार का व्रत करें। 4. प्रातः काल भगवान सूर्य को अर्ध्य प्रदान कर उनका पूजन करें। 5. ऊँ शुं शुक्राय नमः मंत्र का नित्य जप करें। 6. पुखराज तथा माणिक्य रन्त अथवा उनके उपरत्न धारण करें। 7. गुरूवार को पीपल के नीचे घी का दीपक प्रज्वलित करें। 8. हनुमान जी को मंगलवार को चोला चढायें। 9. भगवान श्री कृष्ण का नित्य पूजन करें तथा उनसे सम्बन्धित मंत्रो का जप करें। 10. पांच मुखी रूद्राक्ष तथा तीन मुखी रूद्राक्ष धारण करें।

धनु लग्न और सुख समृद्धि के उपाय –: 1. भगवान गणेश की नित्य पूजा उपासना करें। 2. किसी विशेष मुहुर्त में सम्पूर्ण रामायण का पाठ करें। 3. पुखराज, मूंगा तथ मांणिक्य रत्न अथवा उसके उपरत्नों को लॉकेट में धारण करें। 4. गौरी शंकर रूद्राक्ष को चार मुखी रूद्राक्ष कें साथ धारण करें। 5. बुधवार के दिन बुध की कारक वस्तुओं का दान करें। 6. ऊँ अं अंगाश्काय नमः मंत्र का नित्य जप करें। 7. भगवान की राम की नित्य पूजा उपसना करें। 8. गुरू यन्त्र की नित्य पूजा करें। 9. धार्मिक पुस्तकों का दान करें। 10. हनुमान जी की पूजा उपासना करें।

मकर लग्न और सुख समृद्धि के उपाय –: 1. माँ लक्ष्मी की नित्य पूजा उपासना करें एंव उनसे सम्बन्धित मंत्रो का जप तथ स्त्रोतों का पाठ करें। 2. स्फटिक श्री यंत्र एंव दक्षिणावर्ती शंख की नित्य पूजा उपासना करें। 3. हीरा नीलम अथवा उपरत्न धारण करें। 4. सोमवार के दिन चन्द्रमा से सम्बधित वस्तुओं का दान करें। 5. मां दुर्गा की पूजा उपासना करें तथा उनसे सम्बन्धित मंत्रों का जप करें। 6. ऊँ शुं शुक्राय नमः मंत्र का नित्य जप करें तथा शुक्रवार का व्रत करें। 7. छह मुखी एंव सात मुखी रूद्राक्ष करें। 8. नीलम, हीरा पन्ना रत्न का उपरत्न का लॉकेट गले में धारण करें। 9. शनिवार का व्रत करें तथा शनि से सम्बधित वस्तुओं का दान करें। 10. पीपल पर मीठा जल चढायें।

कुम्भ लग्न और सुख समृद्धि के उपाय –: 1. हनुमान जी तथा भगवान विष्णु की नित्य पूजा उपासना करें तथा उनसे सम्बन्धित मंत्रो तथा स्तोत्रों का नित्य पाठ करें। 2. एक मुखी रूद्राक्ष धारण करें। 3. प्रातः काल सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें। 4. नित्य आदित्य हद्रय स्तोत्र का पाठ करें। 5. गुरूवार का व्रत करें। 6. श्री यंत्र तथ माँ काली का नित्य पूजन अर्चना करें । 7. नीलम, हीरा तथा पन्ना रत्न अथवा उपरत्न का लॉकेट धारण करें। 8. शनिवार को सुन्दर काण्ड का पाठ करें। 9. चार मुखी, छह मुखी तथा सात मुखी रूद्राक्ष धारण करें। 10. गरीवों की मदद करें।

मीन लग्न और सुख समृद्धि के उपाय –: 1. ऊँ ब्रं ब्रहस्पतये नमः मंत्र का नित्य जप करें। 2. तीन मुखी एंव पांच मुखी रूद्राक्ष धारण करें। 3. तीन मुखी एंव पांच मुखी रूद्राक्ष ध ारण करें। 4. मूंगा तथ पुखराज रत्न तथा इनके उपरत्न धारण करें। 5. भगवान शिव का नित्य पूजन अर्चना करें। तथा उनके मंत्रो का जप तथा स्तोत्रों का पाठ भी करें। 6. ऊँ सों सोमाय नमः मंत्र का नित्य जप करें। 7. पुखराज मोती तथा मूंगा रत्नों की एक साथ लोकेट में धारण करें। 8. गुरूवार अथवा मंगलवार के दिन किसी गरीब व्यक्ति की सहायता करें। 9. बुधवार का व्रत करें एंव बुध की कारक वस्तुओं का दान करें। 10. भगवान श्री कृष्ण तथा हनुमान जी की नित्य पूजा उपासना करें। तथा साथ ही उनसे सम्बन्धित मंत्रो का जप तथा स्तोत्रों का पाठ भी नियमित रूप से करें। गुरू मंत्र की पूजा करें।

❋❋❋

यंत्रों को पुनः सिद्ध कराने हेतु

भविष्य निर्णय पाठकों के लिये एक सुनहरा अवसर। दीपावली पर गुरु जी (डा. महेश पारासर) द्वारा प्रत्येक वर्ष विशाल हवन किया जाता है जिसमें पुराने यंत्रों को विधिवत रुप से सिद्ध किया जाता हैं। अगर आप भी अपनें यंत्रों को पुनः सिद्ध कराना चाहते है तो भविष्य दर्शन कार्यालय पर सम्पर्क करें।

मों. 9719666777, 9557775262

शेष पेज 12 से आगे .....

नहाते समय पैरों को अच्छी तरह से साफ करें। इसके अलावा जब भी हम बाहर से आयें, तो कुछ देर रूककर पैर और मुंह अवश्य धोने चाहिए। ऐसा करने से चिड़चिड़ापन और क्रोध कम होने लगेगा।

8. रसोई के बर्तन तथा घर की झाड़ू को कभी पैरों से स्पर्श न करें और न ही हटाएँ। उसे हाथ से उठाकर नियत स्थान पर शयन की मुद्रा में लिटा दें या मूह को ऊपर की और करके कोने में खड़ी कर दें। बर्तनों को सदैव हाथ से ही उठायें।

9. घर में नकारात्मकता को समाप्त करने के लिए रोजाना या सप्ताह में कम से कम एक बार नमक मिले हुए पानी का पोंछा अवश्य लगाएँ। जिन लोगों को अपनी झूठी थाली या बर्तन वहीं उसी जगह पर छोडनें की आदत है, तो उनको सफलता कभी भी स्थायी रूप से नहीं मिलेगी और प्रसिद्धि के लिये भी बहुत मेहनत करनी पड़ती है। अतः यदि आप अपने झूठे बर्तनों को उठाकर निर्धारित स्थान पर रख आते है। तो आप चन्द्रमा और शनि का सम्मान कर रहे होते है।

10. घर के पौधे आपके अपने परिवार के सदस्यों जैसे ही होते है उन्हें भी प्यार और पोषण की जरूरत होती है। जिस घर में सुबह शाम पौधों को पानी दिया जाता है, साफ सफाई रखी जाती है। तो आप बुध, सूर्य और चन्द्रमा का सम्मान कर रहे होते है। और बीमारियों से दूर रहते है।

11. प्रत्येक परिवार में दोपहर के भोजन में सबसे हल्के गौ ग्रास और शाम के भोजन की आखिरी रोटी कुत्ते के लिये निकाली जानी चाहिए। ऐसा करने से देवता और पितृ प्रसन्न रहते है।

12. यदि घर के सदस्यों में मतभेद रहते हैं, तो आटा शनिवार को ही पिसवाँए या खरीदें और उसमें थोडा सा चने का आटा भी मिला दें– स्थिति में सुधार होगा और मनमुटाव दूर होगा।

13. प्रत्येक शनिवार को या माह में कम से कम एक शनिवार को चमेली के तेल का दीपक जलाकर सुन्दर काण्ड का पाठ करने से घर परिवार हमेशा हर प्रकार की विपदाओं से बचे रहते है।

14. घर लौटते समय प्रतिदिन कुछ न कुछ वस्तु लेकर आना चाहिए– इससे घर में बरकत बनी रहती है। ऐसे घर में सुख समृद्धि और धन हमेशा बढता रहता है और घर के सदस्यों की तरक्की होती है।

15. अपनी बेटी, बहन, भूआ और मौसी को सदैव प्रसन्न रखें– उनका सदैव आदर करें उन पर कभी क्रोध न करें अपनी सामर्थ्य के अनुसार समय समय पर उन्हे उपहार देते रहें। ऐसा करने से आपके ऊपर बुध की कृपा बनी रहेगी। आपकी उन्नति और प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी। तथा आप बुद्धिमान व सम्पन्न बनें रहेगें।

16. परिवार में पत्नी को गृहलक्ष्मी का स्थान प्राप्त है। अपनी पत्नी को सदैव खुश रखें। न तो कभी उसका अपमान करें और न ही उसकी अनदेखी करें। उस पर क्रोध भी न करें। उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करतें रहें। समय समय सरप्रइज गिफट देने से आपकी पत्नी को प्रसन्नता होगी, उसी के फलस्वरूप आपका शुक्र ग्रह कभी खराब नहीं होगा।

17. जो लोग बाहर से आने वालें लोगों को या काम करने के लिए आने वालों लेवर आदि को स्वच्छ पानी हमेशा पिलाते है। उनके घर में कभी भी राहू का दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।

18. अगर आपको कहीं पर भी धूकने या कूड़ा फैलाने की आदत है, तो यह निश्चित है कि आपको मिलने वाला यश और सम्मान कभी स्थायी नहीं होगा। निर्धारित स्थान पर ही थूकने या कूड़ा डालने की आदत डालें।

19. जो लोग बाहर से आकर घर में अपने चप्पल, जूते, मौजे, कपड़े आदि इधर उधर फेंक देते है, उन्हे उनके शत्रु बहुत परेशान करते है। और विरोधों का सामना करना पड़ता है। अतः उससे बचने के लिए उन्हें नियत स्थान पर सहीं तरीके से रखें। शत्रु प्रंशासक बन जायेंगें। श्रद्धा और विश्वास से किए गए अनवरत कार्य ही इच्छित फल दे सकते हैं और परिवार में दिखावा रहित व्यवहार ही प्रेम और समन्वयन का मार्ग सृजित कर सकता है। जिसके फलस्वरूप क्रियाओं से सम्बन्धित ग्रह स्वतः ही आपको मंगल फल देते रहेंगें।

❋❋❋

शेष पेज 13 से आगे.....

या महालक्ष्मी हैं जो विष्णु को अतिप्रिय हैं। इस दिन लोग बड़ी श्रद्धा और विश्वास के साथ लक्ष्मी एंव गणेश के पूजन के साथ कुबेर भगवान का भी पूजन करते हैं। इस दिन सभी घरों दुकानों एंव व्यापारिक प्रतिष्ठानों में महालक्ष्मी का पूजन अवश्य करते हैं। व्यापारी लोग वही खाता, तिजोरी एंव तुलाकी पूजा करते हैं। प्रत्येक स्थान को दीप जलाकर प्रकाशित किया जात है। क्योकि यह प्रकाश वर्ष भी है। दीपावली के दिन लक्ष्मी की पूजा करने से उनकी कृपा बनी रहती है। व समृद्धि की वृद्धि होती है। यह मान्यता है कि अर्धरात्रि में लक्ष्मी भ्रमण करती हैं। उन्हे अंधकार पसंद नहीं। तभी दीपावली की रात जगमग ज्योति प्रकाश किया जता है। तथा घर दरबाजे खुले रखे जाते है।ताकि लक्ष्मी जी को घर में प्रवेश करने में परेशानी न हों।

गोवर्धन पूजा– कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। इस दिन को गों पूजा और अनकूट भी कहते हैं। अन्नकूट उत्सव भगवान श्री कृष्ण के अवतार से शुरू हुआ। द्वापर युग में गोबर का अन्नकूट बनाकर श्री कृष्ण की मूर्ति के सम्मूख गायों व ग्वाल बालों की पूजा की जाती थी। फिर श्री कृष्ण व गोवर्धन को पूजा जाता है। पूजा के बाद अन्नकूट कथा भी सुनी जाती है। इस दिन ब्रज में गोवर्धन पूजा एंव परिक्रमा का विधान है। लोग अपने गोधन की पूजा करते है। एंव गोवंश के संवर्धन का प्रण लेते है।

भाईदूज– यह त्यौहार कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीय को मनाया जाता है। जिसे यम द्वितीया भी कहा जाता है। इस पर्व का प्रमुख लक्ष्य भाई तथा बहनमें पावन सम्बन्ध तथा प्रेम भाव की स्थापना करना है, इस दिन बहन बेरी पूजन भी करती है। और भाईयों के स्वास्थ्य तथा दीर्घायु होने की मंगल कामना करके उन्हे तिलक लगाती है। इस दिन बहनें, भाईयों के दीर्घजीवन के लिए यम की पूजा करती हैं। और व्रत रखती हैं जो भाई इस दिन अपनी बहन से स्नेह और प्रसन्नता से मिलता है, उसके घर भोजन करता है। उसे यम के भय से मुक्ति मिलती है। भाइयों का बहन के घर भोजन करने का बहुत माहात्मय है। **इस प्रकार दीपावली का शुभ पर्व उपरोक्त पांच पर्वों के साथ पूर्ण होता है।**

❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262